यह बात और है कि गांधी मरते ही नहीं हैं ...

डॉ. ब्रम्हदीप अलूने

यह गांधी का अंतिम आमरण अनशन था,जो 13 जनवरी 1948 को प्रारम्भ हुआ था. हमेशा की तरह उनका शरीर इस बार भूख और प्यास का संकट झेलने को तैयार नहीं था. इस कारण महज 48 घंटे में ही उनके शरीर ने जवाब दे दिया. गांधी जी के मूत्र में एसीटोन और एसेटिक अम्ल के अंश पाए गये. मूत्र में उच्च एसीटोन का स्तर मधुमेह का संकेत देता है,जिससे कोमा या मृत्यु भी हो सकती है. उनके शरीर में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन, खनिज और जल जैसे पोषक तत्व खत्म हो रहे थे जिनकी आवश्यकता शरीर को सबसे ज्यादा होती है. विटामिन प्रतिरक्षा प्रणाली,रक्त के थक्के जमने और शरीर में ऊर्जा के निरंतर उत्पादन के लिए आवश्यक हैं, खनिज हड्डियों के स्वास्थ्य,विकास,तरल पदार्थों को संतुलित करने और कई अन्य प्रक्रियाओं को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. कठिन आमरण अनशन के कई दौर हो चूके थे और ऐसे में बापू के गुर्गे भी ठीक ढंग से काम नहीं कर रहे थे. दरअसल वे बहुत कमजोर पड़ चूके थे.

गांधी को जब यह बताया गया की यह आमरण अनशन उनकी जान ले सकता है,तो गांधी बोले,मेरे मूत्र में एसीटोन है,इसका अर्थ है की राम में मेरी आस्था में कुछ कमी है. इस पर उनकी सहयोगी सुशीला बहन ने तर्क दिया,राम से इसका कोई मतलब नहीं है. फिर उन्होंने बताया की वैज्ञानिक ढंग से मूत्र में एसीटोन होने का मतलब क्या है. इस पर बापू बोले,क्या तुम्हारा विज्ञान सब कुछ जानता है. क्या तुम गीता में भगवान कृष्ण के यह शब्द भूल गई की मेरे अस्तित्व के बहुत ही सूक्ष्म अंश में यह सारी सृष्टि समायी हुई है. बापू की हालत गिरती ही जा रही थी. लेकिन बड़ी सुबह बापू पांव घसीटते हुए पूजा के कमरें में चले गए और पालती मारकर बैठ गए. यह बापू की शक्ति थी,जो आत्म शक्ति से निकलकर उनके असीम सामर्थ्य को बार बार सामने लाती थी. यह ईसाई ब्रिटिश साम्राज्य का ऐसा दौर था,जिसके राज्य में कभी सूरज अस्त नहीं होता था,पर इस विजेता राष्ट्र की मान्यताओं से बिना विचलित हुए बापू चुनौती दे रहे थे. उन्हें न तो 10 डाउनिंग स्ट्रीट को लेकर कोई उत्साह था और न ही वे दिल्ली की और देख रहे थे.

आजाद देश के भाग्योदय के बीच आने वाले साम्प्रदायिक दंगों की आग को बुझाने के लिए उन्होंने बंगाल की खाड़ी के ऊपर गंगा के मुहाने पर बसे एक गांव श्रीरामपुर में डेरा डाल रखा था. भीषण गर्मी से निपटने के लिए यह बूढ़ा आदमी गीली मिटटी की थैली को बार बार अपने गंजे सिर पर घुमाता रहता. ब्रिटिश साम्राज्य को लगता था की यह आदमी मरता क्यों नहीं है,आखिर इसने ही उस कथित महान साम्राज्य की नींव हिला दी थी. ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल तो बापू की मौत का इंतजार करते करते स्वयं ही बीमार पड़ गए थे. उन्हें बापू का उपवास नाटक नजर आता था. वे कहते थे की गांधी झूठ बोलकर कड़े उपवास का नाटक करता है और इस तरह ब्रिटिश सरकार को ब्लेकमेल करता है. पर बापू की आत्म शक्ति के सामने उनकी एक न चली. बापू की धडकन,रुकने के करीब आकर फिर तेजी से चल पड़ती जैसे उन्हें कभी कुछ हुआ ही नहीं हो. पांच फुट के गांधी ने उन ब्रिटिश हथियारों को बेकार साबित कर दिया था जिससे ब्रिटेन ने दुनिया जीती थी. ब्रिटिश सैनिक मशीनगनों के साथ जब गांधी के सामने आते थे तो गांधी हजारों लोगों की भी ? के साथ बेखौफ अहिंसक विरोध करते थे. बापू के नैतिक बल से अंग्रेज इतने चमत्कृत हुए की अनेक अधिकारियों ने भारत के आजादी के आंदोलन का समर्थन करना शुरू कर दिया.

बंगाल भीषण साम्प्रदायिक दंगों की आग

में जल रहा था और बापू जब वहां पहुंचे तो हिंदू और मुसलमानों की समान घृणा के वे शिकार हुए. लोग कहने लगे की गांधी मरता क्यों नहीं है. कोलकाता के मुस्लिम बाहुल्य इलाके की टूटी फूटी हैदरी मंजिल में उन पर भीड़ ने हमला बोल दिया. पत्थरों की बौछार हुई. कोलकाता से करीब ढाई से किलोमीटर दूर नौआखली था,जहां 1947 में भीषण दंगे हुए थे और हिन्दुओं का बड़ी संख्या में नरसंहार हुआ था. इस इलाके की भौगोलिक और प्राकृतिक जटिलताएं लोगों को भागने का अवसर भी नहीं देती थी.

नोआखाली का इलाका जिसमें श्रीरामपुर गांव भी शामिल था,भारत के सबसे दुर्गम इलाकों में शामिल था. गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के डेल्टा में,जहां हमेशा पानी भरा रहता था,यह छोटे मोटे द्वीपों का एक ग्रामीण क्षेत्र था. इसका कुल विस्तार मुश्किल से 40 वर्गमील था और इसमें 25 लाख लोगों की घनी आबादी रहती थी,जिसमें 20 फीसदी हिंदू और 80 फीसदी मुसलमान थे. यहां के बाशिंदे जल धाराओं में इस प्रकार बंटे हुए थे की एक गांव से दूसरे गांव जाने के लिए छोटी छोटी नावों का उपयोग किया जाता था. जिस प्रकार कोलकाता में हिन्दुओं ने गांधी से घृणा करते हुए कहा था की,गांधी मरता क्यों नहीं है,उसी प्रकार नोआखाली के मुसलमानों ने भी यहीं कहा. वे गांधी के गुजरने के रास्तों पर मैला फेंक देते,बापू यदि दरवाजे की कुण्डी खड़खड़ायें तो लोग दरवाजा खोलकर बापू को बुरी बुरी गलियां देते और दरवाजा बंद कर देते. तमाम संकटों के बीच भी चार महीनों तक गांधी जी नोआखाली के गांवों का दौरा दिया. जेबी कृपलानी, सुचेता कृपलानी, डॉक्टर राममनोहर लोहिया और सरोजनी नायडू ने भी उनके साथ रहकर हिंसा प्रभावित गांवों में शांति बहाली की कोशिश की.

बापू बार बार कहते थे कि भारत का विभाजन करने के पीछे मेरे शरीर के टुकड़े करने होंगे. श्रीरामपुर से करीब साढ़े आठ हजार किलोमीटर दूर दक्षिण अफ्रीका के डरबन के पास फिनिक्स आश्रम में शांति थी लेकिन इसके प्रभाव से गोरी सरकार डरी हुई थी. 1913 में,महात्मा गांधी ने पास कानूनों, विवाह पंजीकरण अधिनियम,तीन पाउंड कर और भारतीयों के आंदोलन पर प्रतिबंध के खिलाफ प्रसिद्ध वोल्क्रस्ट सत्याग्रह शुरू किया. इस विरोध में महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई और कस्तूरबा गांधी सहित अन्य लोगों को जेल भेज दिया गया. स्वयं महात्मा गांधी को भी सलाखों के पीछे डाल दिया गया था. आख़िरकार,जनरल स्मट्स ने हार मान ली और 1914 में भारतीय राहत अधिनियम पारित किया जिसने भेदभावपूर्ण कानूनों को ख़त्म कर दिया. महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका छोड़ने के करीब तीन दशक बीत चूके थे. उनके भारत लौटने से दक्षिण अफ्रीका की गोरों की सरकार ने राहत की सांस ली थी. लेकिन गांधी के आंदोलन अब भी वहां बदस्तूर जारी थे जो भारतीयों और कालों के अधिकारों के लिए लड़ रहे थे. दक्षिण अफ्रीका की सरकार परेशान थी की आखिर गांधी मरा क्यों नहीं.

नेल्सन मंडेला,नामक एक युवा काले लोगों का प्रतिनिधित्व करने लगा था. 1944 में वे अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस में शामिल हो गये जिसने रंगभेद के विरूद्ध आन्दोलन चला रखा था. इसी वर्ष उन्होंने अपने मित्रों और सहयोगियों के साथ मिल कर अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस यूथ लीग की स्थापना की. नेल्सन मंडेला बहुत हद तक महात्मा गांधी की तरह अहिंसक मार्ग के समर्थक थे. उन्होंने गांधी को प्रेरणा स्रोत माना था और उनसे अहिंसा का पाठ सीखा था. गोरों की सरकार अंततऱ्इस गांधीवादी से हार गई और 1994 में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का विरोध करने वाले नेल्सन मंडेला देश के पहले अश्वेत राष्ट्रपति चुने गए.

भारत विभाजन के बाद जिन्ना ने पाकिस्तान पाकर सुकून महसूस किया लेकिन यह थोड़े ही समय का था. खान अब्दुल गफ्फार खान जिन्हें सीमांत गांधी भी कहा जाता है,वे बाद के कई वर्षों तक पाकिस्तान में रहकर भी पाकिस्तान के अस्तित्व को चुनौती देते रहे. मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में गांधीजी के उपदेशों को अपनाया और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन किया. उन्होंने सिविल राइट्स मूवमेंट के माध्यम से काले नीग्रो के अधिकारों की लड़ाई लड़ी और सफलता पाई. उन्होंने अमेरिका में जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई और नीग्रो नागरिकों के लिए बराबरी की मांग की. लूथर किंग को अद्वितीय और अहिंसात्मक आंदोलन के लिए ब्लैक गांधी कहा जाता है.

> सीरिया,फिलीस्तीन,म्यांमार,श्रीलंका,इराक,फ्रांस से लेकर लैटिन अमेरिका,अफ्रीका और एशिया तक गांधी ही गांधी नजर आते है. दुनिया में कहीं भी मानवाधिकारों, समानता, स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय की मांग होती है तो लोगों के हाथों में स्वभाविक रूप से गांधी के बड़े बड़े पोस्टर नजर आते है. इसका सन्देश अहिंसक तो होता है लेकिन गांधी के प्रभावों से सभी सर्व सत्तावादी सरकारें डरती है और वे यह जवाब खोजने की तमाम कोशिशें करने लगती है की गांधी को कैसे मारा जाएं. यह बात और है कि गांधी मरते ही नहीं है.

संत रविदास : भक्ति कर्मयोग और राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत

लाल सिंह आर्य

भारतीय संत परंपरा में संत शिरोमणि गुरु रविदास जी का नाम केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है; वे सामाजिक चेतना, समानता और मानव गरिमा के विराट प्रतीक हैं. उनकी वाणी का मूल संदेश यही था कि ईश्वर बाहरी आडंबरों में नहीं, बल्कि निर्मल मन में निवास करते हैं- मन ही पूजा, मन ही धूप के माध्यम से उन्होंने भक्ति को आंतरिक साधना से जोड़ा. संत रविदास जी एक ऐसे सांस्कृतिक संकल्प का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने समाज को झुकना नहीं, बल्कि मानवता के सूत्र में जोड़ना सिखाया. जात-पात और छुआछूत से जकड़े समाज में उन्होंने प्रेम, समरसता और आध्यात्मिक समानता का दीप जलाया.

15वीं शताब्दी में जन्मे संत रविदास जी ने उस दौर में आवाज उठाई जब सामाजिक विभाजन गहराई तक बैठ चुका था. उन्होंने अपने पदों और जीवन के उदाहरणों से स्पष्ट किया कि मनुष्य की पहचान जन्म से नहीं, बल्कि कर्म और गुणों से होती है.

एकै माटी के सभ भांडे के माध्यम से उन्होंने समस्त मानवता की एकता का दर्शन दिया, वहीं जनम जात मत पूछिए, का जात अरू पात. रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहिं जात कुजात ॥ कहकर जातिगत अहंकार को सामाजिक विघटन का कारण बताया. उनके लिए भक्ति केवल पूजा-पाठ नहीं थी, बल्कि सेवा, शिक्षा और समाज सुधार भी उतने ही पवित्र कर्म थे. ज्ञान को उन्होंने वह शक्ति माना जो व्यक्ति को सही और गलत का विवेक देती है और परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है. संत रविदास जी के जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष था- श्रम की प्रतिष्ठा. वे पनही बनाने का कार्य करते थे और उन्होंने अपने पैतृक पेशे को कभी छोटा नहीं समझा. उन्होंने कहा- श्रम कऊ ईसर जानि कै, अर्थात परिश्रम ही ईश्वर का स्वरूप है. उनसे जुड़ी प्रसिद्ध कथा, जिसमें वे गंगा स्नान पर जाने के बजाय अपने वचन का पालन करते हुए पनही तैयार करने को प्राथमिकता देते हैं, कर्मनिष्ठा और सत्यनिष्ठा का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है.

लोककथाओं के अनुसार, संत रविदास जी के बढ़ते प्रभाव से प्रभावित होकर दिल्ली के शासक सिकंदर लोदी ने उन्हें दरबार में बुलवाया. वहाँ उनसे धर्म परिवर्तन करने का दबाव डाला गया, परंतु संत रविदास जी अडिग रहे. उन्होंने कहाँ वेद धरम त्यागूँ नहीं जो गल चलै कटार .. उन्होंने शांत भाव से कहा कि सच्ची भक्ति हृदय की होती है, उसे डर या लालच से बदला नहीं जा सकता. संत रविदास जी के मन चंगा तो कठौती में गंगा का संदेश यह बताता है कि पवित्रता स्थान में नहीं, मन में होती है. युवाओं के लिए उनका यह जीवनदर्शन आज भी प्रेरणास्रोत है-कर्म करते रहो, फल अवश्य मिलेगा.

उनकी कल्पना का आदर्श समाज बेगमपुरा – दु:ख, भेदभाव और अभाव से मुक्त एक समतामूलक व्यवस्था का स्वप्न था. यह केवल आध्यात्मिक कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की परिकल्पना थी, जहाँ सबको अन्न, सम्मान और समान अवसर मिले. आधुनिक समय में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का समावेशी विकास और सबका साथ सबका विकास की अवधारणा को इसी दृष्टि से जोड़ा गया है, जहाँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधाएँ और अवसर पहुँचाने की बात होती है. श्रमिकों, कारीगरों और वंचित वर्गों के सम्मान तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाली नीतियों को संत रविदास जी के श्रम-गौरव और अंत्योदय की भावना से प्रेरित माना जाता है

कबीरदास जी ने संतों में संत रविदास जी को श्रेष्ठ बताया है, संत रविदास जी अत्यंत विनम्र, निष्कपट और सच्चे भक्ति मार्ग के साधक थे. वे जाति-भेद के विरुद्ध और प्रेम, समानता व मानवता के पक्षधर थे. कबीर और रविदास जी दोनों निर्गुण भक्ति धारा के संत थे, इसलिए उनके विचारों में गहरी समानता मानी जाती है. ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिलै सबन को अन्त्र, छोट-बड़ो सब सम बसै, रैदास रहे प्रसन्न उनके सामाजिक दर्शन को और स्पष्ट करता है. वे केवल आध्यात्मिक मुक्ति की बात नहीं करते, बल्कि धरती पर ही एक न्यायपूर्ण व्यवस्था का स्वप्न देखते हैं.

सिर्फ समझौता नहीं, हमारे भविष्य का रोडमैप है भारत-यूरोपीय संघ एफटीए

पीयूष गोयल

भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आर्थिक कूटनीति में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। इससे लाखों रोजगार पैदा होंगे तथा भारतीय युवाओं और किसानों के लिए व्यापक अवसरों का सृजन होगा। इसके साथ ही लगभग 2 अरब की उस आबादी के लिए धन पैदा होगा जो मिल कर वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक-चौथाई भाग है।

विश्व की दूसरी और चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच यह एफटीए इतिहास के सबसे बड़े व्यापार समझौतों में से एक है। वास्तव में यह व्यापार समझौते से ज्यादा व्यापक है। यह कृत्रिम मेधा (एआई), रक्षा और सेमीकंडक्टर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने वाली विस्तृत साझीदारी है। इस एफटीए से भारत के हर क्षेत्र और नागरिक तथा खास तौर से निर्धन तबकों को लाभ पहुंचेगा।

यह एफटीए नियम आधारित व्यापार और आर्थिक नीतियों में स्थिरता सुनिश्चित करता है जिससे भारत स्वदेशी और विदेशी निवेश के लिए और ज्यादा आकर्षक बनेगा। यह छोटे व्यवसायियों, स्टार्टअप संस्थाओं और कामगारों के लिए अनेक अवसर पैदा करेगा।

विश्व ने प्रधानमंत्री मोदी की घोषणा की सराहना करते हुए इस एफटीए को सभी समझौतों से बड़ा बताया है। यह वैश्विक अनिश्चितता के माहौल में स्थिरता को मजबूत करता है। यह भारत और यूरोपीय संघ को मुक्त बाजार, पूर्वानुमान क्षमता और समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध भरोसेमंद साझीदारों के रूप में स्थापित करता है।

> एफटीए नियम आधारित व्यापार और आर्थिक नीतियों में स्थिरता सुनिश्चित करता है जिससे भारत स्वदेशी और विदेशी निवेश के लिए और ज्यादा आकर्षक बनेगा। यह छोटे व्यवसायियों, स्टार्टअप संस्थाओं और कामगारों के लिए अनेक अवसर पैदा करेगा। विश्व ने प्रधानमंत्री मोदी की घोषणा की सराहना करते हुए इस एफटीए को सभी समझौतों से बड़ा बताया है। यह वैश्विक अनिश्चितता के माहौल में स्थिरता को मजबूत करता है।

भारत ने व्यापार मूल्य के हिसाब से यूरोपीय संघ में अपने 99 प्रतिशत से ज्यादा निर्यात के लिए अभूतपूर्व बाजार पहुंच प्राप्त की है जिससे 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम को बल मिलेगा। इस एफटीए से कपड़ा, रेडीमेड वस्त्र, चमड़ा, फुटवियर, समुद्री उत्पाद, रत्न और आभूषण,हस्तशिल्प, इंजीनियरी सामान और ऑटोमोबाइल जैसे श्रमसाध्य क्षेत्रों को निर्णायक मजबूती मिलेगी।

इस समझौते से लगभग 33 अरब डॉलर के भारतीय निर्यात पर 10 प्रतिशत तक टैरिफ खत्म होगा। इससे कामगारों, हस्तशिल्पियों, महिलाओं, युवाओं तथा सूक्ष्म, छोटे और मझोले उपक्रमों (एमएसएमई) का सशक्तीकरण होगा। वैश्विक मूल्य श्रृंखला से भारतीय व्यवसाय ज्यादा गहराई से जुड़ेंगे और वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत की भूमिका मजबूत होगी।

यह समझौता व्यवसायियों और पेशेवर तबके के लिए दूसरे देशों में जाने को आसान बनाते हुए शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाओं और कंप्यूटर जैसे सेवा क्षेत्रों में अवसरों के नए द्वार खोलता है। इन प्रतिबद्धताओं से उच्च मूल्य वाले रोजगार के अवसरों के खुलने के साथ ही प्रतिभा, नवोन्मेष और संवहनीय आर्थिक विकास के वैश्विक केंद्र के रूप में भारत की स्थिति और मजबूत होती है।

व्यापार समझौते गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने की मोदी सरकार की व्यापक रणनीति का हिस्सा हैं। इस रणनीति में क्रांतिकारी सुधारों और विवेकपूर्ण वित्तीय प्रबंधन के जरिए अर्थव्यवस्था को मजबूत करना तथा सभी पक्षों के लिए लाभकारी समझौते के उद्देश्य से विकसित और पूरक अर्थव्यवस्थाओं के साथ बातचीत शामिल है। यह रणनीति भारत को अपनी ताकत का सही इस्तेमाल करने और उन लाभकारी बाजारों तक पहुंच बनाने में सक्षम बनाती है जो कृषि और डेयरी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के हितों की रक्षा करते हुए श्रमसाध्य क्षेत्रों में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। विकसित देशों के साथ व्यापार समझौते भारतीय उद्योगों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के अवसर प्रदान करते हैं और उपभोक्ताओं को विश्व स्तरीय उत्पाद उपलब्ध कराते हैं। यूपीए सरकार ने बिना सोचे-समझे भारत के बाज़ार खोल दिए थे, इसके उलट मोदी सरकार ने ऐसे समझौते किए हैं जिनमें टैरिफ में कमी धीरे-धीरे की जाती है। जिससे उद्योगों को उचित नीतिगत समर्थन के साथ अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की आपूर्ति प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण का केंद्र है। पिछले सप्ताह इसी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए प्रधानमंत्री ने कहाथा: आइए, इस साल हम अपने पूरे सामर्थ्य के साथ गुणवत्ता को प्राथमिकता दें।

(लेखक केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री हैं)

ठाकरे बंधुओं से दूर हो रहे हैं मतदाता

कृष्णमोहन झा

महाराष्ट्र में विगत दिनों संपन्न हुए स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा 29 में से 17 नगरनिगमों में अकेले अपने दम पर बहुमत हासिल करने में सफल रही है जबकि 8 नगर निगमों में भाजपा नीत महायुति ने बहुमत हासिल किया है. उद्धव ठाकरे की शिवसेना और राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के गठबंधन को इन चुनावों में मिली करारी हार ने सदमे की स्थिति में पहुंचा दिया है. ये चुनाव परिणाम मुंबई महानगर पालिका में तीस साल से चले आ रहे अविभाजित शिवसेना के वर्चस्व के अंत का संदेश लेकर आए हैं.

गौरतलब है कि भाजपा ने मुंबई महानगर पालिका की 227 सीटो में से 89 सीटों पर जीत हासिल कर इतिहास रच दिया है. सत्तारूढ़ महायुति में भाजपा की सहयोगी शिवसेना (शिंदे गुट)29 सीटें जीतकर दूसरे स्थान पर रही जबकि उद्धव ठाकरे की शिवसेना 65 सीटों पर सिमट कर तीसरे स्थान पर आ गई. सबसे शोचनीय स्थिति का सामना उसकी सहयोगी राज ठाकरे की महाराष्ट्र सेना को करना पड़ा जिसे मात्र 6 सीटों पर जीत का स्वाद चखने का मौका मिला. इन नगरीय चुनावों में भाजपा की अभूतपूर्व शानदार सफलता ने निसंदेह राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का कद बढ़ा दिया है जिनकी कुशल रणनीति और सबको साथ लेकर चलने की कार्यशैली ने भाजपा के पक्ष में

माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे ने अपने आपसी मतभेद भुलाकर जो चुनावी गठबंधन किया था उसे मिली करारी शिकस्त ने अब यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या दोनों ठाकरे बंधु मिल कर आगे आने वाले समय में बाला साहेब ठाकरे की विरासत को सहेज कर रखने में सफल हो पाएंगे और इससे भी बड़ा सवाल तो यह है कि दोनों ठाकरे बंधुओं के बीच की यह राजनीतिक मैत्री क्या स्थायी रूप लेने में सफल हो पाएगी. अपनी पार्टी की करारी हार पर राज ठाकरे ने जो प्रतिक्रिया व्यक्त की है उससे यह संदेश मिलता है कि वे अपनी लाइन से नहीं हटेंगे. राज ठाकरे कहते हैं कि 'हमारी लड़ाई मराठी लोगों, मराठी अस्मिता, मराठी पहचान और एक खुशहाल महाराष्ट्र के लिए है. हमारी लड़ाई हमारे वजूद की है.

सबाइन जानते हैं कि ऐसी लड़ाईयां लंबी चलती हैं.' इसी से मिलती जुलती प्रतिक्रिया उद्धव ठाकरे की शिवसेना की ओर से आई है जिसमें कहा गया है कि 'यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है.यह लड़ाई तब तक चलेगी जब तक कि मराठी लोगों को वह सम्मान नहीं मिल जाता जो वह डिजर्व करते हैं.' दोनों ठाकरे बंधुओं की प्रतिक्रियाओं से केवल यही मतलब निकाला जा सकता है कि वे अपनी लाइन से हटने के लिए तैयार नहीं हैं.

आश्चर्य की बात तो यह है कि उनका पूरा चुनाव अभियान मराठी अस्मिता के नाम पर ही केन्द्रित था जो मतदाताओं को आकर्षित करने में असफल रहा. नगरीय निकायों के ताजा चुनाव परिणामों को तो मतदाताओं के इस संदेश के रूप में देखा जाना चाहिए कि उन्हें भाजपा नीत महायुति के सत्ता में रहने से मराठी अस्मिता पर कोई संकट नहीं आ रहा है.

दरअसल नगरीय निकायों के चुनाव परिणामों में ठाकरे बंधुओं के लिए यह संदेश भी छुपा हुआ है कि महाराष्ट्र की जनता उन्हें मराठी अस्मिता के रक्षक के रूप में पुरस्कृत करने के लिए तैयार नहीं है. गौरतलब है कि भाजपा नीत महायुति ने तो यहां विकास के नाम वोट मांगे थे वहीं दूसरी ओर ठाकरे बंधुओं का पूरा चुनाव अभियान मराठी एजेंडा के इर्द गिर्द ही घूमता रहा. चुनाव के पहले उद्धव ठाकरे ने जिस तरह कांग्रेस का साथ छोड़ कर राज ठाकरे से हाथ मिला लिया उसकी उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी. इससे उन्होंने दलित और मुस्लिम मतदाताओं का समर्थन को दिया.

इन चुनाव परिणामों से उद्धव ठाकरे को यह सबक भी लेना चाहिए कि शिवसेना के परंपरागत मतदाता भी उनसे दूर होते जा रहे हैं और झुकाव उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना की तरफ जा रहा है. इसमें कोई संदेह नहीं कि एकनाथ शिंदे ने मूल शिवसेना से अलग हो कर अपनी पकड़ ढीली नहीं होने दी और आज वे मुंबई महानगर पालिका की 29 सीटें जीतकर मेयर पद के लिए भाजपा के साथ सौदेबाजी करने के लिए तैयार हैं.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)